अमर उजाला

# प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 23 मार्च 2019

राजनीति की तुलना में कला, स्वतंत्रता और रचनात्मकता ज्यादा तेजी से समाज को बदल सकती हैं...
...विक्टर पिंचुक, *यूक्रेन के व्यवसायी*

**जब संयुक्त राष्ट्र आतंकी सरगना मसूद अजहर के खिलाफ कार्रवाई करना चाहता है, जब हमारी सरकार पाकिस्तान को अलग-थलग करने की मुहिम चला रही है, तब बालाकोट में की गई जवाबी कार्रवाई पर सैम पित्रोदा का बयान शर्मनाक है।**

# पाकिस्तान को क्लीन चिट !

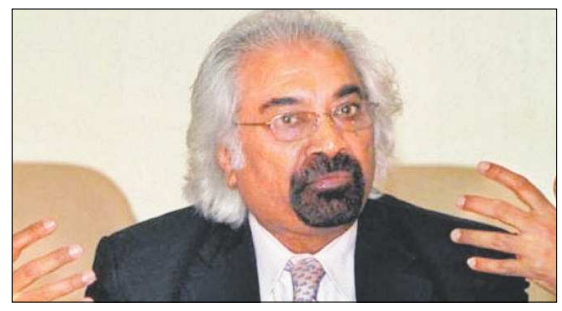

समाजवादी पार्टी के नेता रामगोपाल यादव द्वारा पुलवामा हमले को सियासी साजिश बताने जैसे शर्मनाक बयान से पैदा हुआ विवाद थमा भी नहीं था कि कांग्रेस की मेनिफेस्टो कमेटी के सदस्य और गांधी परिवार के करीबी सैम पित्रोदा ने बालाकोट में की गई जवाबी कार्रवाई में मारे गए आतंकियों का हिसाब मांगकर एक नया विवाद खड़ा कर दिया है, जिसकी तारीफ नहीं की जा सकती। सैम पित्रोदा ढर्रे के राजनेता नहीं हैं, उनकी छवि एक ऐसे व्यक्ति की रही है, जिसने इस देश में दूरसंचार क्रांति को संभव किया। ऐसे एक व्यक्ति की इस तरह की टिप्पणी इसीलिए ज्यादा हैरान करने वाली है। हालांकि विवाद बढ़ने पर सफाई देते हुए पित्रोदा ने इसे अपना निजी बयान बताया, और कांग्रेस ने भी उनकी टिप्पणी से खुद को अलग कर लिया है, लेकिन इससे आतंकवादी हमलों और उनके जवाब में की जाने वाली कार्रवाइयों पर संदेह खड़ा करने से पैदा हुई असहज स्थिति से बचा नहीं जा सकता। एक लोकतंत्र में सवाल पूछने के हक से बेशक किसी को वंचित नहीं किया जा सकता, लेकिन सैम पित्रोदा ने, दुर्योग से, उस विषय पर संदेह व्यक्त किया है, जो हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। पित्रोदा का यह भी कहना था कि 26/11 और पुलवामा हमले के लिए पूरे पाकिस्तान को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। सैद्धांतिक तौर पर भले ही वह गलत न कह रहे हों, लेकिन पाकिस्तान को क्लीन चिट देने जैसा काम वह तब कर रहे हैं, जब दुनिया का बड़ा हिस्सा उसे आतंकवाद का प्रायोजक मानते हुए उसकी लानत-मलामत कर रहा है। बेशक आतंकवादी घटनाओं को कुछ आतंकी ही अंजाम देते हैं, पर पित्रोदा यह कैसे भूल गए कि पाक प्रायोजित आतंकी हमले वहां के सैन्य तंत्र और खुफिया एजेंसी के निर्देशों और मदद के बगैर संभव ही नहीं हैं? और 26/11 से लेकर पठानकोट और पुलवामा हमले सुबूत हैं कि पाकिस्तान सरकार ने कभी जांच में भारत के साथ सहयोग नहीं किया। जब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के ज्यादातर सदस्य देश आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के साथ खड़े होते हुए आतंकी सरगना मसूद अजहर को वैश्विक आतंकी घोषित करने की मुहिम में जुटे हुए हैं, जब खुद हमारी सरकार विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान की असलियत बताते हुए उसे अलग-थलग करने के लक्ष्य में लगी है, तब पाकिस्तान के बारे में सैम पित्रोदा की टिप्पणी किसको लाभ पहुंचाती है?

# तेईस मार्च की विरासत

**आज के दिन वर्ष 1931 में शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी गई थी। इसी दिन 1910 में देशज समाजवाद के प्रणेता राम मनोहर लोहिया का जन्म हुआ था। इसी दिन 1977 में इमरजेंसी की औपचारिक समाप्ति हुई थी। चुनाव के इस दौर में इनके खास मायने हैं।**

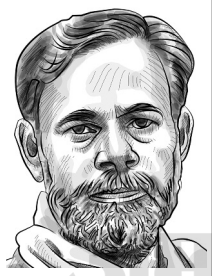

**योगेंद्र यादव**

आज 23 मार्च का दिन 20 वीं सदी के भारत की तीन यादगार घटनाओं के संगम का दिन है। इतिहास का संयोग देखिए कि आगामी चुनाव के संदर्भ में यह तीनों प्रतीक एक ही दिशा में संकेत करते हैं। इसलिए आज देश भर में सैकड़ों स्थानों पर 'देश मेरा, वोट मेरा, मुद्दा मेरा' के बैनर तले अनेक तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

आज के दिन वर्ष 1931 में शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को लाहौर जेल में फांसी दी गई थी। इसी दिन वर्ष 1910 में देशज समाजवाद के प्रणेता राम मनोहर लोहिया का जन्म हुआ था। संयोग से इसी दिन सन 1977 में इमरजेंसी की औपचारिक समाप्ति हुई थी और देश में लोकतंत्र की बहाली हुई थी। लेकिन वक्त की धूल जमने से यह तीनों प्रतीक महज शो-पीस बनते जा रहे हैं, जिन्हें सत्ता अपने ड्रॉइंग रूम में सजा कर रख सकती है। ऐसे पवित्र प्रतीकों को बचाए रखने का यही उपाय है कि इन्हें आज के संदर्भ में पुनः परिभाषित किया जाए।

देश में अधिकांश लोग 23 मार्च को शहीद दिवस के रूप में जानते हैं और भगत सिंह से जोड़कर देखते हैं। दुर्भाग्यवश भगत सिंह का संदेश उनकी तस्वीर और मूर्तियों पर पड़ी फूल मालाओं के बोझ तले दब गया है। भगत सिंह हिंसक क्रांति के पुजारी नहीं थे। वह अंग्रेजों के राज ही नहीं, पूंजीवादी व्यवस्था के शोषण को उखाड़ फेंकने के लिए व्यवस्था परिवर्तन की राजनीति में विश्वास करते थे। हर विचार की निर्मम आलोचना और आजाद सोच के हिमायती भगत सिंह के लिए आजादी का मतलब था, एक ऐसे समाज की रचना करना जिसमें मजदूर और किसान का शोषण बंद हो। आज के संदर्भ में भगत सिंह की शहादत को याद करने का मतलब है शहीदों का नाम ही नहीं, उनका संदेश भी याद रखना। शहीदों के नाम पर वोट मांगने के इस दौर में यह याद रखना जरूरी है कि शहीदों का सपना तभी पूरा होगा, जब देश में

नौजवान, मजदूर और किसान के मुद्दों को सबसे आगे रखा जाए।

राम मनोहर लोहिया की याद को अक्सर गैर कांग्रेसवाद की छतरी से ढक दिया जाता है। इस बहाने नीतीश कुमार जैसे उनके नामलेवा भाजपा के साथ अपने गठबंधन को जायज ठहराते हैं। दरअसल आज के संदर्भ में राम मनोहर लोहिया की असली विरासत है सत्ता के अहंकार और अन्याय के विरुद्ध सतत संघर्ष। 'जिंदा कौमें पांच साल तक इंतजार नहीं करतीं' का नारा हमें इसी जज्बे की याद दिलाता है। लोहिया के समय सत्ता के जिस अहंकार और अन्याय का प्रतीक कांग्रेस थी आज भारतीय जनता पार्टी उसका प्रतीक है। अगर राममनोहर लोहिया आज हमारे बीच होते, तो आज की सत्ता के झूठ और पाखंड का पर्दाफाश करते हुए शायद गैर भाजपा गठबंधन या वैकल्पिक राजनीति की कोशिश कर रहे होते।

इसी तरह से इमरजेंसी के विरुद्ध संघर्ष की स्मृति को केवल इंदिरा गांधी और कांग्रेस विरोध तक सीमित करने का प्रयास हो रहा है। विडंबना यह है कि देश में एक बार फिर लोकतंत्र को संकट में धकेलने वाली सरकार इमरजेंसी विरोध का ढिंढोरा पीटती है। आज देश में मीडिया की दुरावस्था किसी से छुपी नहीं है। सच बताने के बजाय मीडिया आज सच छिपाने का तंत्र बन गया है। पिछले पांच साल में सुप्रीम कोर्ट से लेकर चुनाव आयोग तक हर स्वायत्त संस्था कमजोर हुई है। इस संदर्भ में 23 मार्च हमें याद दिलाती है कि हमें घोषित ही नहीं आज की 'अघोषित इमरजेंसी' का भी विरोध करना होगा। मार्च 1977 का ऐतिहासिक चुनाव हमें भरोसा दिलाता है कि लोकतंत्र में जनता अहंकारी और तानाशाह नेताओं को सबक सिखा सकती है।

23 मार्च के तीनों सबक को जोड़ें, तो यह सीख मिलती है कि चुनाव को लोकतंत्र के संकट का मुकाबला करने का औजार बनाया जा सकता है, बिगड़ैल सत्ता को काबू में लाया जा सकता है, बशर्ते हम संघर्ष की धाराओं को जोड़ें और शहीदों के सपनों और उनके मुद्दों को सामने रखें।

इस सबक को 2019 के चुनाव से जोड़ने की जरूरत है। आज फिर देश में शहीदों के नाम पर राजनीति चल रही है। पुलवामा में शहीद हुए सीआरपीएफ के जवानों के बलिदान पर, बालाकोट में वायुसेना की स्ट्राइक के दम पर वोट मांगने का खेल चल रहा है। इसलिए इस शहीद दिवस पर हम मिल कर कहें : शहीदों के नाम पर वोट मांगना बंद करो। इस चुनाव के दौरान न तो कोई पार्टी या नेता हमारी सेना की बहादुरी का श्रेय ले, न ही कोई पार्टी राष्ट्रीय सुरक्षा के सवाल पर आलोचना करे। जो इस सवाल पर भी राजनीति करने से बाज नहीं आते वे राष्ट्रीय सुरक्षा नहीं, कुर्सी की सुरक्षा की लड़ाई लड़ रहे हैं।

आज चुनाव के मुद्दे को शहीदों के सपनों से जोड़ना है। जब कोई हमारा वोट मांगने आए, तो उससे पूछना है कि आपने क्या किया, आप आगे क्या करोगे? जो सरकार में हैं, उनसे पूछना है कि पिछले पांच साल में क्या किया उसका हिसाब दो। जो विपक्ष में उनसे पूछना है कि अगले पांच साल क्या करोगे उसका भरोसा दो। पूछना है उनसे किसान कि हालत पर, मजदूर के शोषण के बारे में, बेरोजगारी के बारे में, भ्रष्टाचार के बारे में। पूछना है बिजली-सड़क-पानी के बारे में, पूछना है स्कूल, अस्पताल और राशन दुकान के बारे में। जो शहीद जवानों की तस्वीर दिखा कर और उनके शौर्य का सेहरा अपने सिर बांधकर वोट मांगे उससे पूछना है : युद्ध लड़ रहे हो या चुनाव लड़ रहे हो? या कि युद्ध की आड़ में चुनाव लड़ रहे हो? शहीदों की अर्थी और जवानों के खून की ओट में वोट मांगना देशभक्ति नहीं, देशद्रोह है। इस चुनाव का अपहरण करने की कोशिश को विफल करने के लिए देश को खड़ा होकर कहना है : देश मेरा, वोट मेरा, मुद्दा मेरा। इस नारे के साथ आज देश भर के जन आंदोलन सैकड़ों कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है कि चुनाव को पटरी से उतारने की कोशिश का मुकाबला किया जाए और इस चुनाव को वापस जनता के असली मुद्दों पर लाया जाए। लोकतंत्र के पर्व को अंतिम व्यक्ति के मुद्दों से जोड़ना ही 23 मार्च की विरासत के साथ न्याय है।

*-लेखक, स्वराज इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं*

# कलाकारों को मंच मिल सके यही ख्वाहिश है

**अपनी कहानी**

>> तीजन बाई

***हाल में माननीय राष्ट्रपति ने मुझे जो पद्म विभूषण सम्मान दिया है, उसे पाकर मैं बहुत खुश हूं। लेकिन यह सिर्फ मेरा सम्मान नहीं है, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ का सम्मान है। यह सम्मान मुझे इसलिए भी प्रिय है, क्योंकि यह बिन मांगे मिला है।***

**मुझे** पंडवानी की प्रेरणा अपने नाना ब्रजलाल पारधी से मिली। बचपन से ही मैं उन्हें महाभारत की कहानियां गाते-सुनाते हुए देखती थी। वह मुझे इतना अच्छा लगता था कि धीरे-धीरे वे कहानियां मुझे याद होने लगीं। मेरी लगन और प्रतिभा को देखकर उमेद सिंह देशमुख ने बाद में मुझे अनौपचारिक प्रशिक्षण भी दिया, जिसके कारण मेरी प्रतिभा निखरती गई। हालांकि इसके चलते समाज की ओर से बाधाएं भी खड़ी की गईं, लेकिन मैंने गायन का दामन नहीं छोड़ा।

***तेरह की उम्र में पहला मंच प्रदर्शन***

मैंने अपना पहला मंच प्रदर्शन तेरह वर्ष की उम्र में किया था। पंडवानी का गायन दो तरह किया जाता है, बैठकर और खड़े होकर। महिलाएं पंडवानी का गायन केवल बैठकर करती थीं, जिसे वेदमती शैली कहा जाता है, जबकि पुरुष कलाकार खड़े होकर गायन करते हैं, जिसे कापालिक शैली कहा जाता है। लेकिन पुरुषों की तरह खड़े होकर गायन शुरू करने वाली मैं पहली महिला हूं।

***इस तरह फैली प्रसिद्धि***

एक बार प्रसिद्ध रंगकर्मी हबीब तनवीर ने मेरा गायन सुना और उन्होंने मुझे तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से मिलवाया। उसके बाद मेरी ख्याति इतनी बढ़ गई कि देश-विदेश में मैंने अपनी कला का प्रदर्शन किया। पंडवानी गायन के लिए इससे पहले वर्ष 1988 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री और 2003 में पद्म भूषण दिया गया था। इसके अलावा वर्ष 1995 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और 2007 में नृत्य शिरोमणि से भी मुझे सम्मानित किया जा चुका है।

***कला को बचाए रखने की ख्वाहिश***

बचपन में मैं स्कूल नहीं जा पाई। बाद में साक्षरता अभियान के तहत मैंने थोड़ी बहुत पढ़ाई की, पांचवीं की परीक्षा में हिंदी को छोड़कर सभी विषयों में फेल हो गई। लेकिन पंडवानी के कारण मुझे कई विश्वविद्यालयों से अब तक डी.लिट. की चार उपाधि मिली। मेरी इच्छा है कि पंडवानी गायन की यह कला बची रहे, इसका अस्तित्व कायम रहे। इसके लिए मैं अपनी ओर से हर संभव कोशिश कर रही हूं। अब तक मैंने सैकड़ों बच्चों को पंडवानी सिखाई है। मैं अब भी पंडवानी गायन का अपना कार्यक्रम पेश करती हूं। सरकार को कला का संरक्षण करना चाहिए और ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि कलाकारों को मंच मिल सके। बुजुर्ग कलाकारों को पेंशन देने की बात पर भी सरकारों को विचार करना चाहिए।

***जीवन का अविस्मरणीय क्षण***

मेरे जीवन में कई ऐसे रोमांचक और अविस्मरणीय क्षण आए हैं, जो याद रखने लायक हैं। वर्ष 2002 में हम सब लोग मध्य प्रदेश के उमरिया में एक सर्किट हाउस में ठहरे हुए थे। रात के समय जेनरेटर का डीजल खत्म हो गया था, अंधेरा था। मैं रात में एक बार बाहर निकली, तो मुझे एक जानवर दिखाई दिया। डर के मारे मेरी घिग्घी बंध गई, मैंने वहीं पास सो रहे अपने एक सहयोगी को जगाने की कोशिश की, तो वह जानवर मुझे सूंघकर चला गया। सुबह दिन के उजाले में जब हम लोगों ने उसके पैर के निशान देखे, तो पता चला कि रात में शेर आया था। वह घटना याद कर आज भी सिहर उठती हूं।

*-पद्म विभूषण पाने वाली छत्तीसगढ़ की पहली महिला तीजन बाई से* ***रमण कुमार सिंह*** *की बातचीत पर आधारित*

**फैक्ट फाइल**

## कजाकिस्तान

>> कजाकिस्तान की राजधानी अस्ताना

***क्षेत्रफल के हिसाब से दुनिया का नौवां सबसे बड़ा देश है कजाकिस्तान।***

सोवियत संघ के बिखरने के बाद अस्तित्व में आए स्वतंत्र गणराज्य कजाकिस्तान के प्रथम राष्ट्रपति नुरसुल्तान नजरबायेव करीब तीस वर्ष तक सत्ता में रहने के बाद पद से हट गए। 78 वर्षीय नजरबायेव सोवियत युग के अंतिम शासक थे। 2015 में वह पांचवें कार्यकाल के लिए विजयी हुए थे। कासिम-जोमार्ट तोकायेव ने कजाकिस्तान के नए राष्ट्रपति के रूप में काम संभाल लिया है। कजाकिस्तान मध्य एशिया का ऐतिहासिक देश है। यह दुनिया का सबसे बड़ा भूमिबद्ध (लैंडलॉक्ड) देश है और इसका कुल क्षेत्रफल पश्चिमी यूरोप के बराबर है। क्षेत्रफल के आधार पर यह दुनिया का नौवां सबसे बड़ा देश है। यह अपने कम जनसंख्या घनत्व के लिए भी जाना जाता है, जिसकी कुल आबादी सिर्फ 1.8 करोड़ है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद इसने सबसे अंत में अपने आपको स्वतंत्र घोषित किया था। सोवियत प्रशासन के दौरान वहां कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं संपन्न हुईं, जिनमें कई रॉकेटों के प्रक्षेपण से लेकर ख्रुश्चेव की कृषि उत्पादन बढ़ाने से संबंधित वर्जिन भूमि परियोजना शामिल हैं। देश की अधिकांश भूमि स्तेपी घास मैदान, जंगल तथा पहाड़ी क्षेत्रों से ढकी है। यहां के मुख्य निवासी कजाख लोग हैं, जो तुर्क मूल के हैं। अपने इतिहास के अधिकांश हिस्से में कजाकिस्तान की भूमि यायावर जातियों के साम्राज्य का हिस्सा रही है। 1998 में सोवियतकालीन राजधानी अल्माटी से बदलकर अस्ताना को इसकी नई राजधानी बनाया गया। कजाक और रूसी यहां की प्रमुख भाषाएं हैं।

# ब्राजील में शीर्ष स्तर पर भ्रष्टाचार

**पूर्व राष्ट्रपति टेमेर की गिरफ्तारी ब्राजील में शीर्ष पर व्याप्त अव्यवस्था और भ्रष्टाचार के बारे में बताती है।**

**न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए एर्नेस्टो लोंडोलो, लेटिसिया कैसाडो**

**ब्राजील** में कानून मंत्रालय के अधिकारियों ने भ्रष्टाचार के एक मामले की जांच के सिलसिले में बृहस्पतिवार को पूर्व राष्ट्रपति माइकल टेमेर को गिरफ्तार कर लिया, जिनका राष्ट्रपति काल विगत दिसंबर में ही समाप्त हुआ था। टेमेर के साथ-साथ अधिकारियों ने मोरेरा फ्रैंको को भी हिरासत में लिया है, जो टेमेर की कैबिनेट में मंत्री और उनके काफी करीबी थे। वैसे तो टेमेर के राष्ट्रपति पद पर रहते ही भ्रष्टाचार के कई मामलों में उनका नाम सामने आ चुका था। लेकिन ब्राजील में चूंकि सांविधानिक पदों पर आसीन व्यक्तियों को कानूनी सुरक्षा मिलती है, इसलिए तब उन मामलों में उनसे पूछताछ संभव नहीं थी। अलबत्ता पद से हटने के दो महीने के भीतर उनकी गिरफ्तारी बताती है कि ब्राजील में राजनीति और खासकर सत्ता राजनीति कितनी भ्रष्ट है। टेमेर की गिरफ्तारी ने ब्राजील के लोगों को एक साल पहले की याद दिला दी है, जब पूर्व राष्ट्रपति लुला डा सिल्वा को भ्रष्टाचार और मनी लॉन्ड्रिंग के अपराध में बारह साल कैद की सजा हुई थी।

वरिष्ठ राजनेता टेमेर ने राजधानी ब्रासीलिया में

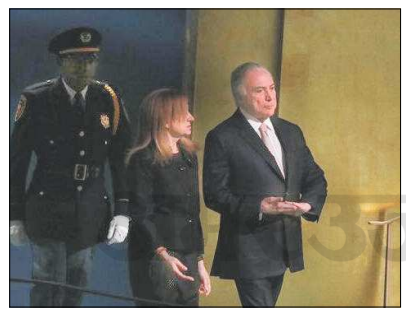

सत्ता के गलियारे में खुद को बेहद मजबूती से स्थापित कर लिया था। लेकिन हाल के वर्षों में भ्रष्टाचार के कम से कम दस मामलों में उनका नाम आया था, जिससे उनकी छवि निरंतर खराब होती चली गई। अभियोजकों ने एक टिप्पणी में टेमेर को उस अपराधी संगठन का मुखिया बताया, जिसने जनता के लाखों डॉलर हड़प लिए हैं। उस टिप्पणी में आगे कहा गया है कि इस संगठन से जुड़े लोग अब भी अवैध तरीके से धन प्राप्त कर रहे हैं और छिपाने के लिए उसे देश से बाहर भेज रहे हैं। दक्षिणपंथी टेमेर 2016 में तब राष्ट्रपति बने, जब उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति डिल्मा रोसेफ के खिलाफ महाभियोग चलाने के लिए ब्राजील में माहौल बनाया था। रोसेफ के राष्ट्रपति काल में टेमेर दो बार, पहले 2010, और फिर 2014 में उप-राष्ट्रपति बने, लेकिन मंदी की वजह से जब देश में रोसेफ की लोकप्रियता का ग्राफ गिरने लगा, तब टेमेर ने उनकी पार्टी से समर्थन वापस ले लिया था।

अपनी सीमित राजनीतिक पूंजी और पहचान वाले टेमेर अपने राष्ट्रपति काल में भ्रष्टाचारियों से साठगांठ के लिए ही ज्यादा जाने गए। नतीजतन ब्राजील के हालिया इतिहास में सबसे अलोकप्रिय राष्ट्रपति के रूप में उनका नाम दर्ज हुआ और भ्रष्टाचार को सांस्थानिक रूप देने के लिए उन्हें जनता के गुस्से का भी पात्र बनना पड़ा।

जून, 2017 में एटॉर्नी जनरल ने टेमेर पर एक दिग्गज फूड कंपनी से 1,52,000 डॉलर रिश्वत लेने का आरोप लगाया था। कुछ महीने बाद टेमेर पर भ्रष्टाचार के नए आरोप के साथ भ्रष्टाचार के पिछले मामले में जांच को प्रभावित करने का आरोप लगा। इसके बाद टेमेर ने उन विरोधी सांसदों को साधने का काम शुरू किया, जिनके बारे में आशंका थी कि वे टेमेर के भ्रष्टाचार के मामलों को सुप्रीम कोर्ट में ले जा सकते हैं। पर शीर्ष पर रहते हुए भ्रष्टाचार करने वाले लोगों की तरह टेमेर भी कानून से बच नहीं पाए।

**इस हफ्ते के शब्द**

### अजीत कुमार मोहंती

**प्रतिष्ठित भौतिकीवेत्ता और वैज्ञानिक अजीत कुमार मोहंती को भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर का निदेशक नियुक्त किया गया है।**

### चड्डी (CHUDDY)

**भारतीय भाषा के इस शब्द को हाल ही में ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी में शामिल किया गया है। इसे शॉर्ट्स के रूप में परिभाषित किया गया है।**

### ग्रीन कार्ड में बढ़ोतरी

**293%**

**की वृद्धि हुई है दो वर्ष की अवधि में भारतीयों द्वारा ग्रीन कार्ड हासिल करने के मामले में, अमेरिकी विदेश मंत्रालय के अनुसार।**

**सूत्र**

>> स्टीव बाल्मर

# अपना दृष्टिकोण भी पैदा कर सकता है अवसर

**जब** मैं चौबीस वर्ष की उम्र में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के बिजनेस स्कूल में पढ़ रहा था, उसी समय मैंने पढ़ाई छोड़ने और हार्वर्ड के अपने साथी बिल गेट्स की कंपनी माइक्रोसॉफ्ट में काम करने का फैसला कर लिया। हालांकि मेरे इस फैसले ने मेरे माता-पिता को थोड़ा परेशान कर दिया, लेकिन उन्होंने मुझे इसकी अनुमति दे दी। इससे पहले मैंने दो वर्ष तक प्रॉक्टर ऐंड गैंबल कंपनी में असिस्टेंट प्रोडक्ट मैनेजर के तौर पर काम किया था, फिर मैं एमबीए करने स्टैनफोर्ड चला गया था। लेकिन एक वर्ष के भीतर ही मैंने एमबीए की पढ़ाई छोड़ माइक्रोसॉफ्ट जॉइन कर लिया।

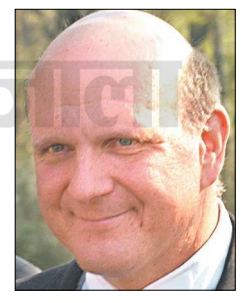

सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह लोगों को अपने मन के मुताबिक काम करने के लिए सशक्त बनाती है। यह लोगों को रचनात्मक बनाती है और नई चीजें सीखने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए मुझे इसमें अपने करिअर की बेहतर संभावना दिखी। मैं मूलतः बिल गेट्स का सहायक बन गया। मैंने महसूस किया कि वहां जो कुछ भी है, उसे पेशेवर बनाने की जरूरत है। एचआर डिपार्टमेंट के तहत मैंने योग्य लोगों की भर्ती शुरू की। बिल ने मुझे 50 हजार डॉलर वेतन का प्रस्ताव दिया, जो उस समय के हिसाब से अच्छा वेतन था। इसके अलावा कंपनी में पांच से दस फीसदी शेयर और मुनाफे में दस फीसदी हिस्सा भी। माइक्रोसॉफ्ट की आईबीएम के साथ सौदेबाजी में मैंने प्रमुख भूमिका निभाई। माइक्रोसॉफ्ट कंपनी में मैं विभिन्न पदों पर काम करता रहा और मैंने माइक्रोसॉफ्ट को एक्सबॉक्स लॉन्च करने, स्काइप को अधिग्रहीत करने और बीस अरब डॉलर का व्यवसाय खड़ा करने में मदद की। करीब पंद्रह वर्षों तक मैंने माइक्रोसॉफ्ट में काम किया और फिर सीईओ के पद से रिटायर हुआ। हालांकि इस बीच बिल गेट्स के साथ मेरे संबंधों में कई बार कड़वाहट भी आई, पर सेवानिवृत्त होने के बाद भी कंपनी से मैं प्यार करता रहा। मेरा मानना है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए कभी दूसरों से अपनी तुलना नहीं करनी चाहिए। सफलता के लिए अपने निर्णयों में सटीक होना जरूरी है और लोगों से व्यक्तिगत संपर्क बनाना जरूरी है। मैंने हमेशा कम शब्दों में अपनी बात रखी, जिसका मुझे फायदा हुआ। सफलता के लिए अपना नजरिया विकसित करना जरूरी है। कभी-कभी आपके पास कोई नजरिया होता है, जो अवसर पैदा करता है, तो कभी कोई मौका मिलता है, जब आप अपना दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

**सफलता के लिए अपने निर्णयों में सटीक होने के साथ-साथ लोगों से व्यक्तिगत संपर्क बनाना भी जरूरी है।**